Toppersnotes®
Unleash the topper in you

3rd – ग्रेड

अध्यापक

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

भाग - 4

लेवल - प्रथम

हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	संज्ञा	1
2	सर्वनाम	3
3	विशेषण	4
4	क्रिया	5
5	संधि	12
6	समास	28
7	लिंग	34
8	वचन	37
9	कारक	38
10	काल	41
11	वाच्य	43
12	वर्तनी शुद्धि	45
13	मुहावरे	58
14	लोकोक्तियाँ	64
15	हिन्दी शिक्षण	67
16	हिन्दी शिक्षण विधि	70
17	भाषा दक्षता का विकास	78
18	भाषा कौशल	80
19	भाषा–शिक्षण उपागम	83
20	भाषा–शिक्षण में चुनौतियाँ	85
21	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	86
22	आंकलन	90
23	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	95

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	Article (लेख)	97
25	Time and Tense (समय और काल)	101
26	Voice (वाच्य)	105
27	Narration (कथन)	109
28	Idioms & Phrases (मुहावरे और वाक्यांश)	118
29	Phrasal Verb (वाक्यांश क्रियाएँ)	131
30	One Word Substitution (एक शब्द प्रतिस्थापन)	140
31	Principle of Teaching English	163
32	Communicative Approach to English Language Teaching	169
33	Methods of Learning English Language	174
34	The Role of Home Languages Multilingualism	180
35	Methods of Evaluation	182
36	Remedial Teaching in English Language	186

1 CHAPTER संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है। सुंदरता एक गुण का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

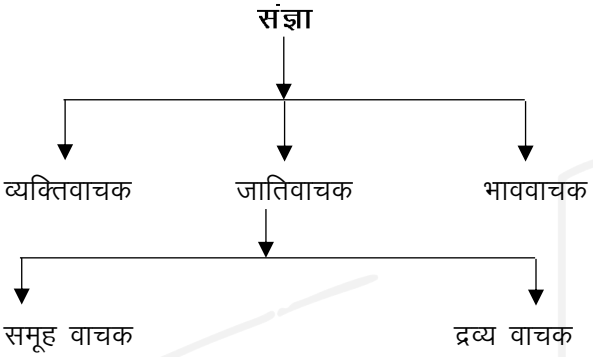

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।
2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
   - प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
   - भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
     1. जातिवाचक संज्ञा से
     2. सर्वनाम से
     3. विशेषण से
     4. क्रिया से
     5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता

शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट / थकान
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान
सुनना	सुनवाई
कमाना	कमाई
गाना	गान
चमकना	चमक
उड़ना	उड़ान
पीना	पान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
   आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
   सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
   गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

2 CHAPTER सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष   मध्यम पुरुष   अन्य पुरुष

(i) उत्तम पुरुष – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) मध्यम पुरुष – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) अन्य पुरुष – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह, ये।
दूर की वस्तु के लिए – वह, ये।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
  उदाः रमन को कोई बुला रहा है।
- निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
  उदाः दूध मे कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद, अपना।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

- सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
  (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
  (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
  (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति से परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

Unleash the topper in you

3 CHAPTER विशेषण

परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

जैसे – छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है ।

यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (संज्ञा) है।

विशेष – विशेषण की पहचान का तरीका

किसी भी वाक्य में कैसा/कैसी/कैसे अथवा कितना/कितनी/कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है। यह विशेषण माना जाता है।

जैसे –

(i) अंकित कैसा लडका है ?
उत्तर – अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है।

(ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें है ?
उत्तर – मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गाये है।

विशेषण के भेद – विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते है।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण
5. व्यक्ति वाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते हैं, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है।

जैसे – कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बड़ा लड़का, पुराना मकान आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे। एक, दूसरी, चौगुनी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि।

3. परिमाण वाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते है उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है ।

जैसे – दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोडा सा पानी

4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते है।

जैसे – (i) यह किताब मेरी है। (ii) वह लडका खाना खा रहा है। (iii) जो लोग मेहनत करते है वे अवश्य अपनी मंजिल पाते है।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण

ऐसे शब्द जो मूल रूप से व्यक्तिवाचक संज्ञा है परन्तु वाक्य में विशेषण का काम करती है उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाः नागपुरी संतरे, कश्मीरी सेब, बनारसी साड़ी

विशेषण की अवस्थाएँ – 3 होती है।

(i) मूलावस्था – जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है।

जैसे – अतुल एक अच्छा लड़का है।

(ii) उत्तरावस्था – जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थो की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है।

जैसे – (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है।
(ii) मानसी पटुतर लड़की है।

पहचान – जब किसी विशेषण शब्द से पहले 'से' शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद 'तर' प्रत्यय जुडा हो तो वहाँ उत्तरावस्था मानी जाती है।

(iii) उत्तमावस्था – जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थो में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है।

पहचान – जब विषेशण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी।

जैसे – (i) स्नेहा कक्षा की पटुतम बालिका है।
(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है।
(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन है।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते है, वे प्रविशेषण कहलाते है।

जैसे – (i) वह बहुत तेज दौड़ता है।
(ii) अवनी अत्यंत सुंदर बालिका है।

16 CHAPTER

हिन्दी शिक्षण विधि

1. अनुकरण विधि

- अनुकरण विधि में बालक अपने शिक्षक का अनुकरण कर लिखना, पढ़ना व नवीन रचना करना सीखता है।
- अनुकरण विधि तीन प्रकार की होती है।
  (1) लिखित अनुकरण
  (2) उच्चारण अनुकरण
  (3) रचना अनुकरण

(अ) लिखित अनुकरण – लिखित अनुकरण के पाँच प्रकार होते है।

(i) **रूप–रेखा अनुकरण** – रूपरेखा अनुकरण में शिक्षक हल्के हाथ से अभ्यास पुस्तिका पर अक्षरों की आकृति बना देता हैं अथवा मुद्रित पुस्तिकाएँ जिनमें अक्षर या वाक्य बिन्दु रूप में लिखे होते हैं। यह बहुत पुरानी विधि है।

(ii) **मोन्टेसरी विधि** – इस विधि में बालक, आँख, कान व हाथ तीनों ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करते हुए अनुकरण करता हैं। वह अध्यापक के बोले हुए को सुनता है। श्यामपट्ट पर लिखा हुआ देखता है और अपने पास उपलब्ध वर्णों पर अँगुली फेरकर अनुभव करता है।

(iii) **पेस्टॉलॉजी विधि** – इस विधि द्वारा प्रत्येक वर्ण की आकृतियों के खण्ड करके अनुकरण करवाया जाता है।

(iv) **जैकटॉट विधि** – इस विधि में बालक अध्यापक द्वारा बोले गये शब्दों का अनुकरण करके लिखता है।

(v) **स्वतंत्र अनुकरण** – अध्यापक श्यापट्ट पर या अभ्यास पुस्तिका पर अक्षर लिख देता है और बालक से कहता है कि वह नीचे स्वयं उसी प्रकार के अक्षर लिखें।

(ब) उच्चारण अनुकरण

(i) इस विधि का प्रयोग बच्चों को शब्दों का सही उच्चारण करवाने, नये शब्दों का ज्ञान देनें व मात्राओं के शुद्ध उच्चारण को सिखानें हेतु किया जाता है।

(ii) यह विधि उन भाषाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं जहाँ एक अक्षर की एक से अधिक ध्वनियाँ होती है। जहाँ पर लिखा कुछ जाता है और पढ़ा कुछ जाता है।

जैसे – Knowledge – नॉलेज

Put पुट (उ) U, But बट (अ) U

(स) रचना अनुकरण

- इस विधि में अध्यापक द्वारा बच्चे को एक शैली या भाषा की रूपरेखा बनाकर दे दी जाती है तथा उसके आधार पर अन्य रचना करने के लिए कहा जाता है।
  जैसे – दीपावली का लेख बनाकर होली पर लेख लिखाना।
  - यह विधि पूर्णतः मनोवैज्ञानिक नहीं है।
  - इसमें भाषा तो छात्रों की होती है, शैली अध्यापक की होती है।
  - यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयुक्त हो सकती हैं।

2. इकाई विधि

- इस योजना का प्रतिपाद श्री मॉरीसन महोदय ने किया
- इसका जन्म गैस्टालट मनोवैज्ञानिक के आधार पर हुआ।
- यह विधि आधुनिक विधि है।
- इकाई विधि का शिक्षा में प्रयोग 1920 ई. में हुआ।
- अध्ययन व अध्यापन कि वह विधि है जो विषय वस्तु को छात्र के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करती है कि वे सीखनें में मानसिक व शारीरिक रूप से व्यस्त रहे और इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करे कि प्राप्त ज्ञान के माध्यम से वे नई परिस्थितियों के साथ समायोजन कर सके।
- इकाई का सर्वप्रथम संगठन हरबर्ट महोदय ने दिया था जिसके निम्नलिखित चरण थे –

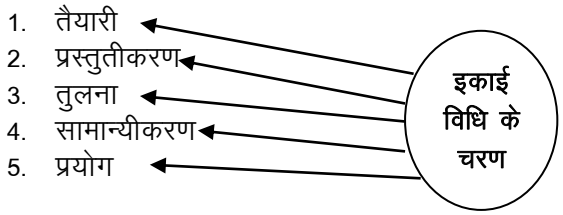

- हरबर्ट के शिष्य रीन ने 1926 ई. में छठा पद 'उद्देश्य' जोड़ा।
- 1926 ई. में मॉरीशन ने इकाई संगठन में निम्न पदों का उल्लेख किया है –

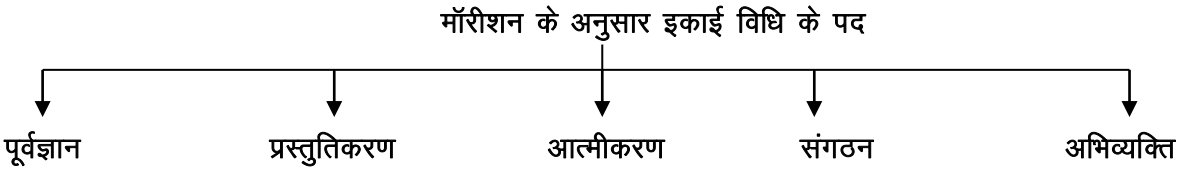

मॉरीशन के अनुसार इकाई विधि के पद

पूर्वज्ञान → प्रस्तुतिकरण → आत्मीकरण → संगठन → अभिव्यक्ति

3. प्रत्यक्ष विधि

- प्रत्यक्ष विधि का अर्थ – वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप से दिखाना।
- इस विधि को सुगम पद्धति, निर्बाध विधि, समातृ विधि अथवा प्राकृतिक विधि भी कहते है।
- वस्तुओं व जीव–जन्तुओं का चित्र अथवा प्रतिमान दिखाकरण क्रियाओं को करके दिखाना।
- इस विधि का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांस में 1901 ई. में अंग्रेजी भाषा के लिए किया गया।
- इसका सूत्रपात पश्चिमी देशों में हुआ।
- भारत में इस विधि का प्रयोग 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ।
- बंगाल में **श्री टिपिंग** को, मुम्बई में **श्री फ्रेजर** को और मद्रास में **श्री येट्स** को इस पद्धति को सर्वप्रथम अपनाने का श्रेय दिया जाता है।
- इस विधि में तीन मुख्य बातों का ध्यान रखा जाता है।
  1. इसमें मातृभाषा का प्रयोग वर्जित है।
  2. मौखिक कार्य को प्रधानता दी जानी चाहिए।
  3. वस्तु और शब्द के मध्य सीधा संबंध स्थापित कर पढ़ाया जाए।

गुण

1. इसमें वार्तालाप, मौखिक, अभ्यास व बोलनें के अभ्यास पर बल दिया जाता है।
2. इसमें अन्य भाषा को स्वतंत्र व पृथक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।
3. व्याकरण शिक्षण के स्थान पर सम्पूर्ण वाक्य को इकाई माना जाता है।
4. इस विधि द्वारा पढ़ाते समय पढ़ाई जाने वाली भाषा में ही आदेश – निर्देश दिये जाते है।
5. इस विधि का मुख्य सिद्धान्त यह है कि जिस प्रकार बालक श्रवण व अनुकरण द्वारा मातृभाषा सीख लेता है, उसी प्रकार वह दूसरी भाषा सीख लेता है।
6. इस विधि द्वारा व्याकरण अनुवाद विधि के दोष दूर हो जाते हैं।
7. इस विधि से सुनना व बोलना दोनो से ही भाषा कौशलों का पर्याप्त विकास होता है।
8. अनुभूति और अभिव्यक्ति के साथ संबंध बनाकर अध्ययन करवाया जाता हैं।
9. इसमें बच्चे को 'अ' से अनार 'ई' से ईख चार्ट में चित्र के साथ या प्रत्यक्ष दिखाकर इन अक्षरों को लिख दिया जाता है।

दोष

1. सीमित शब्दावली का ज्ञान संभव होता है।
2. वाक्य संरचना का ज्ञान नहीं दिया जाता है।
3. सभी शब्दों की प्रत्यक्ष व्याख्या संभव नहीं है।
4. वाचन व लेखन कौशलों का विकास नहीं हो पाता है।
5. इस विधि में कठिनाई यह है कि कुछ संज्ञा शब्दों पुस्तक, कलम, गेंद, कागज, कुर्सी आदि का ज्ञान तो करा दिया जाता है पर भाववाचक शब्दों एवं विशेषणों एवं संरचनात्मक शब्दों के ज्ञान में कठिनाई होती है।
6. इसके द्वारा केवल संज्ञा या उन शब्दों का ज्ञान दिया जा सकता है जिनका चित्र आदि बन सके या जिन चीजों को कक्षा तक लाया जा सके।

4. व्याकरण – अनुवाद विधि

- संस्कृत, अरबी, ग्रीक, लेटिन आदि के शिक्षिण की यह प्राचीनतम व परम्परागत विधि है।
- संस्कृत में डॉ. रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर द्वारा सर्वप्रथम अपनाये जाने के कारण "भण्डारकर विधि" भी कहते है।
- द्वितीय भाषाओं की "स्वयं शिक्षण मालाएँ" इसी विधि पर आधारित है।

गुण

1. द्वितीय भाषा सिखानें की सर्वाधिक प्रचलित व प्राचीन विधि है।
2. भाषा कौशल को शिक्षा प्रदान करना इस विधि का प्रमुख उद्देश्य है।
3. इस विधि में अन्य भाषा के शब्दों का सहानुवाद मातृ भाषा में किया जाता है तथा अन्य भाषा के व्याकरण के साथ – मातृभाषा का व्याकरण भी पढ़ाकर तुलना की जाती है।
4. इसमें मातृभाषा के अवतरणों का अनुवाद द्वितीय भाषा में करवाकर शिक्षा दी जाती है।
5. बोलने की अपेक्षा लिखने व पढ़ने पर जोर दिया जाता है।
6. अहिन्दी भाषी क्षैत्रों में हिन्दी सिखानें में उपयुक्त हैं।

दोष

1. यह विधि नियम रटनें पर बल देती है अतः अमनोवैज्ञानिक विधि है।
2. इसमें अध्यापन का अधिकांश समय नियमों व व्याकरण शिक्षा में व्यतीत हो जाता है।
3. मौखिक अभ्यास की यह विधि अपेक्षा करती है तथा व्याकरण ज्ञान पर बल देती है।

Unleash the topper in you

5. द्विभाषी विधि

- द्विभाषी विधि अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी आदि विदेशी भाषा पढ़ानें के काम में ली जाती है।
- बालक मातृभाषा प्रत्यक्षीकरण के साथ सीखता है।
- हिन्दी में इसी के समान एक दूसरी विधि अनुवाद विधि है।
- इस विधि में एक व्यक्ति के बोले हुए शब्द व वाक्यों का दूसरा व्यक्ति अन्य भाषा में अनुवाद करता है। इसमें प्रत्येक शब्द का अनुवाद नहीं करके केवल उन्ही शब्दों को अनुवाद किया जाता है जिनको बच्चा अपनी मातृभाषा में नहीं समझता है।
- जैसे– माँ ने कहा 'लो मीठा आम खाओ' बालक ने आम खाया उसको पता चला कि आम यह वस्तु होती है।
- अब जब विदेशी भाषा का ज्ञान कराया जाएगा और उसमें Mango को स्पष्ट करना है तो बालक से कहा जाएगा। Take Mango बालक नहीं समझेगा फिर कहेंगे Take आम, यहाँ बालक का मातृभाषा में आम शब्द स्पष्ट है। अतः वह आम ले लेगा।
- इस प्रकार द्विभाषा विधि में प्रत्येक शब्द को अनुवादित नहीं किया जाता है।
- इस विधि में मातृभाषा व विदेशी भाषा को संयुक्त रूप से पढ़ाया जाता है।

दोष

यह विधि छोटी कक्षाओं के लिए उपयुक्त नहीं है।

6. सैनिक विधि

- इसे संगठनात्मक विधि भी कहते हैं।
- इस विधि का विकास द्वितीय महायुद्ध के समय अमेरिका में सैनिकों को द्वितीय भाषा सिखानें हेतु किया गया था।
- इसे श्रव्य – भाष्य विधि तथा अनुकरण – परिस्मरण विधि भी कहते है।
- इसमें शब्दावली के स्थान पर भाषा संगठन पर बल दिया जाता है।
- इसमें सैद्धान्तिक ज्ञान के स्थान पर भाषिक कौशलों को सिखाया जाता हैं।
- इस विधि में द्वितीय भाषा – सिखानें हेतु अभ्यास का महत्वपूर्ण स्थान है।
- इस विधि में एक आधार वाक्य लेकर उससे संबंधित अन्य वाक्यों को सिखाया जाता है।
- इस विधि द्वारा प्रत्यक्ष विधि के दोषों का निवारण होता है।

दोष

यह निम्न कक्षाओं के लिए अनुपयोगी विधि है।

7. ध्वन्यात्मक विधि

- यह विधि हिन्दी भाषा की ध्वनियों (स्वर, व्यंजन) का शुद्ध उच्चारण सिखानें में बहुत उपयोगी है।
- इस विधि द्वारा शिक्षण करानें पर बोलनें व लिखने संबंधी अशुद्धियों का निवारण हो जाता है।
- यह विधि किसी शब्द के अर्थ की अपेक्षा उच्चारण पर बल देती है।
- उच्चारण संबंधी कठिनाइयों के निवारण हेतु सर्वाधिक उपयुक्त विधि है।
- इस विधि में एक साथ उच्चारित होनें वाले शब्दों का उच्चारण एक साथ सिखाया जाता है।
  जैसे – कर्म, धर्म, मर्म, शर्म आदि।
- छोटी कक्षाओं में इस विधि द्वारा अध्यापन कराते समय बच्चों को चित्र दिखाकर शब्दों की ध्वनि का ज्ञान कराते हुए उसके प्रथमाक्षर को विभिन्न रंगों का करके दिखाया जाता है। जिसमें बालक उस वर्ण की ध्वनि सीख जाता है।
  जैसे – अ – अनार
- इस विधि को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा प्रयोगशाला, लिंग्वाफोन, श्रवणयंत्र, टेपरिकॉर्डर आदि का प्रयोग किया जा सकता है।
- ये विधि संश्लेषणात्मक कहलाती है क्योंकि इसमें अक्षर से आरंभ करते है। अक्षरों के जोड़ या संश्लेषण से शब्द बनाते है।

8. दूरस्थ शिक्षण

- दूरस्थ शिक्षण से अभिप्राय – घर बैठे शिक्षण से है।
- दूरस्थ शिक्षा का सर्वप्रथम विचार ब्रिटेन के प्रधानमंत्री हेराल्ड विल्सन ने 1963 ई. में दिया था जिसे हवाई विश्वविद्यालय कहा गया।
- फ्रांस में इसको टेली असाइनमेंट के नाम से तथा जर्मनी में 'फर टू अनरिचि' भारत में पत्राचार पाठ्यक्रम, खुला विश्वविद्यालय के नामों से जाना जाता है।
- इस विधि का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को उसकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा देना, लचीली, पूर्व निर्धारित उद्देश्यों युक्त विशिष्ट शिक्षा देना है।
- यह विधि भारत के संविधान में वर्णित शिक्षा के सार्वजनीकरण, शिक्षा के समान अवसर के सिद्धान्त का अनुसरण करती है।
- यह शिक्षा पद्धति छात्र केन्द्रित है।
- भारत में प्रथम खुला विश्वविद्यालय "आंध्रप्रदेश" खुला विश्वविद्यालय के नाम से हैदराबाद में 26 अगस्त, 1982 में हुआ।
- इस पद्धति द्वारा कार्य का मूल्यांकन व परीक्षण कर शिक्षक द्वारा विद्यार्थी को निर्देश प्रदान किये जाते है।

- वर्तमान में इस पद्धति में व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं जिनका लाभ शिक्षार्थी ले सकता है।
- दूरस्थ शिक्षा शिक्षक और छात्रों के मध्य निम्नांकित प्रकार की दूरियों की ओर संकेत करती है –
  (1) अधिगम और अन्तः क्रिया की दूरी
  (2) भौतिक दूरी
  (3) पाठ्यक्रम एवं शिक्षण की दूरी

9. वाचन विधि

गैंग नामक विद्वान के अनुसार – शब्दों का ठीक से उच्चारण कर सकनें की योग्यता वाचन कहलाती है।

वाचन के उद्देश्य

1. पुस्तक पढ़कर उसकों समझना व समझाना।
2. बालकों को अक्षर, शब्दोच्चारण, उचित ध्वनि, निर्गम बल, सुस्वरता का ज्ञान देकर भाषा का उचित संस्कार करना।
3. भावनानुसार उचित आरोह– अवरोह ज्ञान देना।
4. वचन प्रभावोत्पादक बनाना।

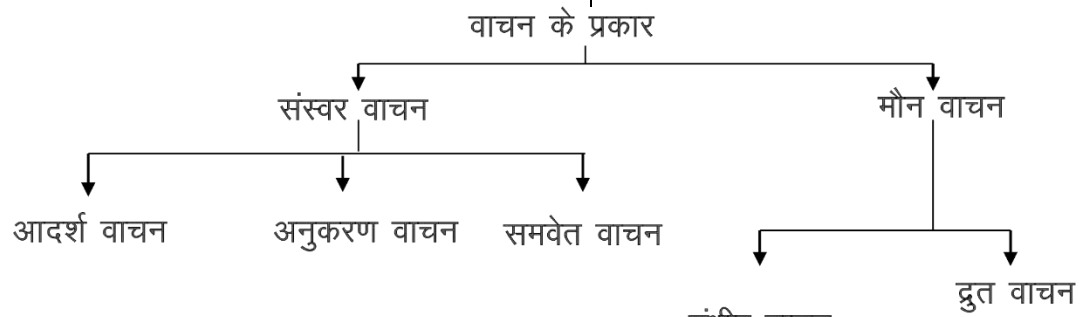

- **आदर्श वाचन** – शिक्षक द्वारा
- **अनुकरण वाचन** – बालक द्वारा
- **समवेत वाचन** – शिक्षक, बालक दोनों

संस्वर वाचन की विशेषताएँ

इसमें विद्यार्थी ध्वनियों का ज्ञान, शब्दों के अर्थो का ज्ञान, स्पष्टता रुचि होना आदि उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

संस्वर वाचन की विधियाँ

1. स्वरोच्चार
2. देखो और कहो
3. ध्वनि साम्य विधि
4. वाक्य शिक्षण विधि
5. सामूहिक पाठ विधि
6. कहानी विधि

संस्वर वाचन के दोष

1. शिक्षकों के प्रशिक्षण का अभाव
2. वाणी संबंधी दोष
3. अभ्यास संबंधी दोष
4. मनोवैज्ञानिक दोष
5. ज्ञान संबंधी दोष

मौन वाचन

- मौन वाचन से एकाग्रता, पढ़ने की गति, चिन्तनशीलता का विकास, कल्पना शक्ति का विकास आदि उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।
- मौन वाचन से अर्थ ग्रहण शीघ्रता से होता है। उच्चारण संबंधी दोष छिप जाता है।

(i) **गंभीर वाचन** – ध्यानपूर्वक धीरे–धीरे जैसे – परीक्षा की तैयारी करना।

(ii) **द्रुत वाचन** – जल्दी–जल्दी पढ़ना, जैसे – अखबार पढ़ना।

मौन वाचन के उद्देश्य

1. इससे छात्रों की वाचन गति तीव्र होती है तथा वे पठित सामग्री का अर्थग्रहण आसानी से कर सकते है।
2. बच्चों में साहित्यिक रुचि पैदा करना।
3. एकांकी समय का सदुपयोग।
4. पठित सामग्री का केन्द्रीय भाव या विचार ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना।
5. शब्द– कोश का विकास करना।
6. बोध शक्ति विकसित करना।

मौन वाचन के समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. मौन वाचन नियमित व एकाग्र होकर किया जाना चाहिए।
2. विद्यार्थी की प्रगति का लेखा–जोखा रखना चाहिए। उसकी गति की जाँच होनी चाहिए।
3. वाचन के उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए।

मौन वाचन का मूल्यांकन

1. अवतरण लिखकर
2. सारांश लिखकर
3. सत्यासत्य परीक्षा (सत्य + असत्य)

मौन वाचन की विशेषताएँ

1. तेजी से पढ़ना
2. पढ़ने में एक प्रभाव होना
3. ज्ञान – प्राप्ति
4. मानसिक विश्राम

Toppersnotes Unleash the topper in you

मैनिल ने संस्वर वाचन के दोषों के निम्न कारण बताए

1. शब्दों को ठीक से न पहचानना।
2. नैत्र गति ठीक न होना।
3. अशुद्ध उच्चारण।
4. अर्थ को न समझना।
5. एक–एक शब्द पढ़ना।

सुन्दर वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें

1. वाचन करते समय पुस्तक व आँखों के बीच 30 सेमी. (1 फीट) की दूरी आदर्श होती है।
2. पुस्तक व हाथ की कोहनी के बीच का कोण 45 डिग्री होना चाहिए।
3. पाठ का आरंभ और अंत मंद स्वर से होना चाहिए।
4. स्वर में श्रोताओं तक पहुँचने का बल हो।

SQ3R – यह सूत्र पठन शिक्षण में सहायक है

S	–	Survey	–	सर्वेक्षण
Q	–	Question	–	प्रश्न
R	–	Read	–	पठन
R	–	Recite	–	आवृत्ति
R	–	Review	–	समीक्षा

10. पर्यवेक्षित अध्ययन विधि

- इस विधि को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय डेजी मारविन को है।
- मारविन ने सन् 1971 में इस विधि का सुझाव प्रस्तुत किया था।
- यह विधि कुशल शिक्षिक के निर्देशन में और निरीक्षण में सम्पन्न होती है। इसमें शिक्षार्थी को कार्य देकर अध्यापक द्वारा निरीक्षण किया जाता है तथा बालक के सामनें समस्या आने पर समाधान कर निर्देश दिया जाता है।

विशेषताएँ

1. यह विधि छात्रों में स्वाध्याय करनें की प्रवृत्ति विकसित करने, आत्म–निर्भर बनानें व कौशल विकास में उपयोगी है।
2. इस विधि में छात्र अध्यापक के कुशल निर्देशन व निरीक्षण में स्वाध्याय द्वारा विषय को समझने व कुशलता प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।

उद्देश्य

1. वैयक्तिकता कला पर आधारित शिक्षा देना।
2. आवश्यकतानुसार शिक्षा देना।
3. गृहकार्य की समस्या का समाधान करना।
4. स्वाध्याय शील बनाना।

मुनरों नामक विद्वान ने इस विधि के नौ नियम बताए

1. कक्षा–कक्ष बाहरी आकर्षणों से रहित हो।
2. प्रतिदिन अध्ययन के लिए निश्चित समय व स्थान निर्धारित हो।
3. शिक्षार्थी द्वारा शिक्षिक प्रदत्त पाठ का अध्ययन शीघ्र होना चाहिए।
4. अध्ययन से पूर्व पाठ्यक्रम की सामग्री जुटाना।
5. पाठ को निर्धारित समय पर आरंभ करे।
6. पूर्व पाठ के मुख्य बिन्दुओं को मन ही मन दोहराना चाहिए।
7. पाठ के अंत में पाठ का सारांश लिखना।
8. कठिन बिन्दु अंकित कर अध्यापक से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए।
9. पाठ समझ में आने तक पूरी तरह पढ़ा जाये।

गुण

1. सभी छात्र अपनी – अपनी क्षमता के अनुसार अध्ययन कर सकते है।
2. इस विधि द्वारा छात्र असफल कम होते है।
3. शिक्षक की भूमिका निर्देशक के रूप में होती है।
4. अध्ययन के प्रति पालक में रुचि जाग्रत होती है, चिन्तन का विकास होता है।

दोष

1. इस विधि में प्रतिभाशाली बालकों को हानि होती है।
2. यह विधि अपेक्षाकृत अधिक समय लेती है।

सोपान

(i) उत्प्रेरणा
(ii) तैयारी
(iii) कार्य विभाजन
(iv) तथ्य संकलन
(v) कक्षा निरीक्षण
(vi) सूचना संश्लेषण
(vii) सारांशीकरण
(viii) श्यामपट्ट कार्य
(ix) पुनरावृत्ति

11. आगमन–निगमन विधि

आगमन विधि – पतंजलि

आगमन विधि निम्न शिक्षण सूत्रों का अनुसरण करती है –

1. उदाहरण से नियम की ओर
2. विशिष्ट से सामान्य की ओर
3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर
4. प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर
5. मूर्त से अमूर्त की ओर
6. ज्ञात से अज्ञात की ओर
7. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर

- सामान्य उदाहरणों द्वारा किसी नियम तक पहुँचना इस विधि का मुख्य सिद्धान्त है।
- उदाहरणों पर तार्किक ढ़ंग से विचार–विमर्श करते हुए किसी विशेष सिद्धान्त नियम सूत्र की खोज की जाती है।

24 CHAPTER ARTICLE (लेख)

Article

Indefinite - A/An **Definite – The**

Position of Article

1. Noun से पहले
   जैसे –
   He has an umbrella.
   Noun
2. Adjective से पहले
   जैसे –
   Monika has a long stick.
   Adjective
3. Adverb + Adjective + Noun से पहले
   जैसे – She is a very beautiful girl.
   Adv. Adj. N.
4. All/both + double + ….. + Noun के बीच में
   जैसे – All the girls.
   Double the amount.

A and An का प्रयोग

- A/An का प्रयोग अनिश्चित Singular Noun से पूर्व करते हैं ।
  Eg:- I have a car.
  This is an orange.
- यदि किसी शब्द के उच्चारण की प्रथम ध्वनि व्यंजन हो तो → A, एवं स्वर हो तो → An
  जैसे –
  An umbrella [word में प्रथम अक्षर Vowel होने पर भी ध्वनि स्वर की है ।]
  A union [word में प्रथम अक्षर Vowel होने पर भी ध्वनि व्यंजन की है ।]
  A one rupee note [vowel होने पर भी ध्वनि व्यंजन की है ।]
  An honest man [व्यंजन होने पर भी ध्वनि स्वर की है ।]
- Vowel से प्रारम्भ होने वाले वाक्यों में an लगता है।
  An inkpot
  An apple
- जब u अक्षर 'यू' ही पढा जाऐ तो a लगता है ।
  A European
  A useful
  A uniform
- जब o अक्षर को 'व' पढा जाये तो a लगता है ।
  A one eyed boy
  A one handed girl
- जब h अक्षर 'अ' पढा जाऐ तो an लगता है ।
  An hair
  An M.A.
  An L.L.B
- जब किसी verb को noun के रूप में प्रयोग करते हैं तो उससे पहले A या An लगता है ।
  Ex:- He goes for a walk.
  She goes for a swim.
- जब Exclamatory sentence what या How से प्रारम्भ हो तो Singular countable noun से पूर्व A का प्रयोग होता है ।
  Ex:- What a hot day.
  How find a day.
- Singular countable noun से पूर्व
  Eg:- I have a pen.
  Exclamatory वाक्यों में what/how के बाद
  Eg:- What a grand building.

Unleash the topper in you

- कुछ गिनती बताने वाले शब्द जैसे – hundred, thousand, million, dozen, couple से पहले 'a' लगता है ।

  Eg:- A dozen pencil were bought by her.
- Half से पूर्व 'a' का प्रयोग किया जाता है ।

  Eg:- $2\frac{1}{2}$ meter two and a half merter.
- कुछ विशेष Phrases में A/An का प्रयोग

  In a fix, in a hurry, in a nutshell, make a noise, make a foot, keep a secret, as a rule, at a stone's throw, a short while ago, at a loss, take a fancy to, take an interest in, take a liking, a pity, tell a lie.

Omission of A/An -

(a) Plural noun से पूर्व नहीं किया जाता है ।

Eg:- A boys have come. (×)

(b) Uncountable noun से पूर्व

'The' का प्रयोग :–

(1)

Name of rivers	The Ganga
News papers	The Amar Ujala
Unique things (अद्वितीय)	The Earth, The Moon
Historical building	The Taj Mahal
Superlative degree	The best
Holy books	The Ramayan
Post	The Secretory, The D.M.
Nationality	The Indian
Ordinal Numbers	The First, The Second
Musical Instrument	The Tabla, The Flute
Mountain	The Himalyas

(2) Cinema, Theatre, Circus, office, Picture, Station, bus stop से पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- My friend go to the theatre today.

(3) जब Proper noun या common noun बनाया जाता है तो The Article लग जाता है ।

Ex:- Kalidas is the Shakespeare of India.

(4) The का use किसी देश के नाम से पूर्व नहीं होता है but यदि country के नाम के साथ Republic/Kingdom/States जुड़े हो तो इससे पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex: - He visited India and United states. (×)

He visited India and the United states. (✓)

(5) Sky, Moon, World, Sea, से पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- The sky is dark and the moon is shining.

(6) जब Adjective का use noun की भाँति होता है तो उससे पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- Rich should help poor. (×)

The Rich should the help poor. (✓)

(7) जब Comparative degree से पूर्व कोई selection कराना हो तो उसके पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- He is stronger of the two. (×)

He is the stronger of the two. (✓)

(8) जब कोई वस्तु Understood होती है तो उससे पूर्व 'The' का प्रयोग होता है ।

E.g:- Kindly return the book. (That I gave you)

Can you turn off the lights ? (The light in the room)

(9) Ordinal से पूर्व 'The' का प्रयोग किया जाता है । (First, second, third, …)

E.g:- The second chapter of this book is very difficult.

(10) Adjective 'same' एवं 'whole' के पहले और 'all' एवं 'both' के बाद article 'The' का प्रयोग होता है ।

Eg:- He is the same boy that met me in the market.

The whole period was wasted.

Omission of 'The'

(1) Name of games, Name of Subjects से पूर्व the article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- I play the cricket. (×)

I play cricket. (✓)

(2) Proper noun से पूर्व The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- Shakespeare was the greatest dramatist. (✓)

(3) Before Material Noun

Ex:- Gold is the most Precious metal. (✓)

The Tea grows in India. (×)

Tea grows in India. (✓)

Particular sens e में

Ex:- The tea of Assam is very famous. (✓)

Ex:- Water of the ganga is sacred. (×)

The Water of the Ganga is sacred. (✓)

(4) Before Abstract noun (भाववाचक संज्ञा)

Ex: - <u>The virtue</u> is its own reward. (×)

Virtue is its own reward. (✓)

Ex: - <u>The love</u> is a natural feeling. (×)

Love is a natural feeling. (✓)

Exception

Particular sense में

Ex:- <u>Honesty</u> of Ram cannot be doubted. (×)

Ex:- The honesty of Ram cannot be doubted. (✓)

He speaks the truth. (✓)

(5) Before languages :-

Ex:- <u>The english</u> is spoken all over the world. (×)

English is spoken all over the world. (✓)

Particular sense में

Ex:- He knows the Sanskrit language.

(6) School, college, home, church, temple, sea, burnt, bed, table, hospital, market, prison, court के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- I go to <u>the</u> bed early. (×)

Ex:- I go to bed early. (✓)

(7) Name of disease के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- He died of <u>the</u> cholera. (×)

Ex:- He died of cholera. (✓)

Note: - But the rickets, the plague, the flu, the mumps, the measles are correct.

(8) Regular meals के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- I take <u>the</u> breakfast. (×)

Ex:- I take breakfast. (✓)

Particular sense में

Ex:- The lunch that was served to the guests was delicious. (✓)

(9) Parts of body, mode of travel के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- The liver is the largest organ of human body. (✗)

Ex:- Liver is the largest organ of human body. (✓)

Ex:- He will go there by the bus. (✗)

Ex:- He will go there by bus. (✓)

(10) The name of relations के पहले The article नहीं लगाते है ।

Uncle/mother, father

Ex:- Father will go to Delhi tomorrow.

Toppersnotes
Unleash the topper in you

25 CHAPTER

Time and Tense (समय और काल)

Tense (काल) :- Tense किसी कार्य के समय एवं अवस्था को व्यक्त करता है ।

- Tense किसी भी वाक्य को structure प्रदान करता है। जबकि time से उसी वाक्य का समय के आधार पर उचित कार्य निकाला जाता है ।

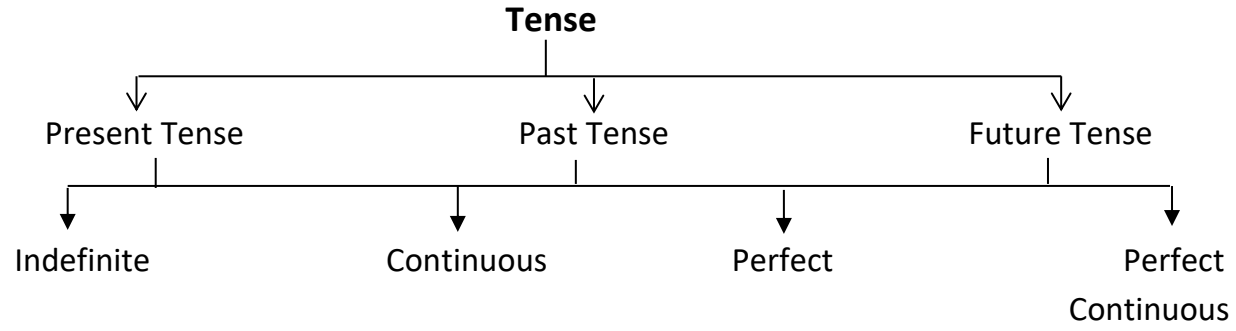

- **Verb** को व्यक्त करने का चिह्न :–
  V^1 = (Present Form) = Go
  V^2 = (Past Form) = Went
  V^3 = (Participle) = Gone
  V^4 = (V^1 + ing) = Going
  V^5 = (V^1 + s/es) = Goes

1. Present Tense

(1) Present Indefinite/Simple Present -

Sub + V^1/V^5 + Obj.

Use of present indefinite tense :-

(a) Habitual or regular or repeated action को express करने में

Eg :-

(1) I live at Jaipur.

(2) Sweta and Anshu are dancers.

(b) Universal truth तथा permanent activities में,

Eg :-

(1) The sun rises in the east.

(2) Man is mortal.

(c) fudV समय में fixed program तथा Fixed plan के संदर्भ में–

Eg :-

(1) The PM comes here tomorrow.

(2) The college reopens in October.

(d) आँखों देखा हाल का प्रसारण (मैच, आयोजन, कार्यक्रम, नाटक आदि) में–

Eg :-

(1) Ganguli runs after the ball.

(2) Virat hits a four.

(e) Author के statement को express करने के लिए–

Eg:-

(1) Keats says, "A thing of beauty is a jo forever".

(f) History की घटना को जीवंत या ताजा बनाकर दिखाने में–

Eg:-

At last, Ram kills Ravan.

(g) ऐसे वाक्य जिनसे स्थायी कार्य (Permanent Activity) या स्वभाव (Nature) का बोध हो, तो चाहे वह किसी काल की बात करे, तो उसमें Present Indefinite का प्रयोग होता है।

Ex:-

(1) We work with our hand

(2) We hear with our ears.

(2) Present Continuous

Sub. + is/am/are + V^4 + Object.

Uses

(a) ऐसे कार्यो के लिए जो बोलने के वक्त जारी हो–

Eg :-

(1) Mukesh is coming now.

(2) They are playing.

(b) निकट भविष्य के Fixed program of plan तथा जो future tense का बोध कराता हो–

Eg :-

(1) He is going to Chennai tonight.

(2) I am leaving for Patna next month.

(c) See, Hear, Smell, Notice, Recognize, Taste, Appear, Seem, Look, Love, Hate, Detest, Dislike, Hope, Doubt, Admit, Wish, Intend, Believe, Know, Have, Comprise, Include etc. के साथ Present Continuous नहीं बनता है ।

Eg :-

(1) She is knowing him very well. (×)

She knows him very well. (✓)

(2) He is owning a scooter. (×)

He owns a scooter. (✓)

(3) Present Perfect -

Sub. + has/have + V^3 + Object.

Uses

(a) ऐसे कार्यो के लिए जो तुरन्त समाप्त हुए है–

Eg :-

(1) She has written a letter.

(2) I have just bought a pen.

(b) जो कार्य Past में start हुए हो व अब भी जारी है ।

Eg :-

(1) I have lived in this house since 1999.

(2) She has been ill since Friday.

(c) इस Tense में निम्नलिखित Adverbs/Adverbial phrases का प्रयोग होता है –

Ever, Never, Always, Occasionally, Often, Several Times, Already, Yet, Just, Lately, Recently, So far, Up to now, Up to the present, Since, For etc.

Eg :-

(1) For → Period of time [for 4 days, for 3 months etc.]

(2) Since → Point of time [since Monday, since morning]

(4) Present Perfect Continuous

Subject + has/have + been + V^4 + obj. + For/since + time.

Uses -

(a) ऐसे कार्य जो Past में प्रारम्भ हुआ और अभी तक जारी है–

Eg :-

(1) She has been reading a novel since morning.

(2) I have been teaching in the school for five years.

2. Past Tense

(1) Past Indefinite/Simple past - Subject + V^2 + Object.

Uses

(a) जो कार्य किसी निश्चित समय में घटित हुआ या समाप्त हुआ हो–

Eg :-

(1) He went to Mumbai yesterday.

(2) The building was built in 1999.

Time expressing words- yesterday, The day before yesterday, The other day, Ago, Last morning, Last day, Last week, In march 1942 etc. प्रयोग होते है ।

(b) Past habitual actions को दर्शाने के लिए– Seldom, Always, Used to, Daily, etc. शब्द आते है ।

Eg :-

(1) He went on Sundays.

(2) In my childhood, I played cricket.

(3) Gandhiji used to spin in the afternoon.

(c) It is time, it is high time, It is about time etc. के बाद simple past का प्रयोग होता है ।

Eg :-

(1) It is time you studied.

(2) It is high time she left for the bus stop.

(d) Suppositional sentences :- प्रायः If, as if, as though, if only, I wish, we wish, he wishes, she wishes, they wish आदि से स्टार्ट होने वाले वाक्यों में Simple past का प्रयोग किया जाता है ।

Eg :-

(1) I wish I were the CM of Rajasthan.

(2) He talks as if he were my master.

(e) bl Tense से भूतकाल में कार्य करने की आदत का बोध होता है अर्थात् यह बोध होता है कि कोई कार्य बराबर होता था ।

Ex :-

(1) He always helped me.

(2) He never touched wine.

(2) Past Continuous - Subject + was/were + V^4 (V^1 + ing) + Obj.

Uses -

(a) Past में जारी कार्यो के लिए

Eg :-

(1) They were reading a notice.

(2) I was writing this book yesterday morning.

(b) tc दो कार्य Past में एक ही समय पर हो रहे हो तो दोनों के लिए Past Continuous का प्रयोग होता है ।

Eg :-

(1) While my brother was singing, I was sleeping.

(2) While I was writing this chapter, my wife was watching TV.

(c) Get, become, grow –verb किसी कार्य में दिनोंदिन वृद्धि या कमी दर्शाये तो Past Continuous tense का प्रयोग किया जाता है ।

Eg :-

(1) He was becoming poorer and poorer.

(2) It was getting darker and darker.

(3) Past Perfect - Sub. + had + V^3 + Obj.

Uses

(a) अगर दो कार्य Past में एक के बाद एक हो तो पहला कार्य past perfect में और दूसरा कार्य simple past में होगा–

Eg :-

(1) The bell had rung before I reached the school.

(2) When she reached there, the dinner had started.

(b) I wish, we wish, he wishes, she wishes, they wish, as if, as though … etc. के बाद काल्पनिक तथ्यों का वर्णन करने में–

Eg :-

(1) She wishes she had been born in 1948.

(2) She talks to me as if she had come from the film industry.

(c) Before and After का प्रयोग–

1^{st} action	Before	2^{nd} action
Past perfect		Simple past

2^{nd} action	After	1^{st} action
Simple past		Past Perfect

Eg :-

(Past perfect)

(1) I had seen him before he stopped his car.

(Simple past)

(Simple perfect)

(2) I met him after I had finished my work.

(Simple past)

(d) Verbs- hope, expect, think, mean, intend, suppose, want आदि past में किसी कार्य के होने की उम्मीद की गयी पर पूरा न हुआ के अर्थ में आते है–

Eg :-

(1) I had hoped that he would come to see my daughter.

(2) He had wanted to see me but unfortunately he fell ill.

(4) Past perfect continuous :- Subject + had been + V^4 + obj. + For/since + time.

Uses -

(a) Past में जारी चल रहे किसी कार्य के लिए–

Eg :-

(1) I had been reading a novel since 2008.

(2) She had been singing a song.

3. Future Tense

(1) Future Indefinite/Simple future - Subject + Shall/will + V^1 + Obj.

Uses -

(a) सामान्य रूप से भविष्य में होने वाले कार्यो के लिए–

Ex :-

(1) He will help you.

(2) I Shall meet you.

(b) Future में होने वाले actions को express करने के लिए निम्नलिखित structure-

Sub. + has/have + infinitive.

Eg :-

(1) I have to pay the fees. (Future)

(2) He has to come in time. (Future)

Sub. + is/am/are + going + infinitive.

Eg :-

(1) I am going to write several books.

(2) He is going to buy a motorcycle tomorrow.

(2) Future Continuous : - Subject + shall/will + be + V^4 (V^1 + ing) + obj.

Uses -

(a) Future में जारी रहने वाले कार्यो के लिए–

Eg :-

(1) He will be playing cricket tomorrow morning.

(2) She will be staying there.

(3) Future Perfect :- Subject + shall/will + have + V^3 + Obj.

Uses -

(a) Future में किसी निर्धारित समय तक समाप्त होने वाले कार्यो के लिए–

Eg :-

(1) He will have finished his work before Monday.

(2) By this time next year I shall have watched the film.

(b) संभावना (likelihood) और अनुमान (inference)को अभिव्यक्त करने के लिए–

Eg :-

(1) You will have heard the name of Mother Teresa.

(2) You will have read the Gita.

(4) Future perfect continuous :- Sub. + Shall/will + Have been +V^4 + Obj.

Uses -

(a) Future में किसी निश्चित समय तक जारी कार्यो के लिए–

Eg :-

(1) Lata will have been singing from morning.

(2) By the end of this month I shall have been teaching have for five year.